परमेश्वर ने अपनी प्रजा की शिक्षा के लिए यशायाह को तैयार किया

यशायाह वह भविष्यद्वक्ता था जिसने स्वर्ग का दर्शन किया।

प्रार्थना :प्रिय परमेश्वर, जिस प्रकार यशायाह ने आपकी पवित्रता और वैभव का दर्शन किया, हम भी कर सकें और जिस प्रकार उसने स्वयं के लिए किया, हम भी कर सकें। हमें भी शुद्ध कर और अपनी सेवा के लिए भेज।''

किसी भी ऐसी गतिविधि का चुनाव किजिए जो बच्चों की आयु व आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके और बच्चे सीख सकें।

यशायाह 6:1-8 पढ़ें या मुखाग्र इस वर्णन को बताएं जबकि यशायाह ने महान परमेश्वर का दर्शन पाया और प्राचीन इस्राएल की सेवा में भेजा गया।

निम्मलिखित प्रश्न पूछें (उत्तर प्रत्येक प्रश्न के साथ दिए गए हैं)

- यशायाह ने परमेश्वर को कहां देखा? (पद 1)
- परमेश्वर के सिंहासन के संमुख कौन उड़ रह थे? (पद 3, सारप बड़े स्वर्गदूत थे)
- सारप प्राकार कर बचा कह रहे थे? (पद 3)
- स्वर्गदूतों ने जब गीत गाया तो मंदिर में क्या हुआ? (पद 4)
- जब ऐसा हुआ तो यशायाह ने क्या अनुभव किया? (पद 5)

- यशायाह क्यों भयभीत था? (पद 5)
- किस प्रकार यशायाह के ओंठ शुद्ध किए गए? (पद 6,7)
- स्वर्गदूत ने यशायाह से क्या कहा? (पद 7)
- यशायाह ने परमेश्वर का कौन से प्रश्न सुना? (पद 8)
- यशायाह ने उस प्रश्न का क्या उत्तर दिया? (पद 8)
- जिस प्रकार यशायाह को पवित्र किया गया, क्या हमें भी आवश्यकता है कि परमेश्वर हमें शुद्ध करे और हमारे पापो को क्षमा करे?
- यदि परमेश्वर हमसे कहे कि मैं किसे भेजूं, तो हमारा क्या उत्तर होगा?

किस प्रकार परमेश्वर ने यशायाह को शिक्षण कार्य के लिए तैयार किया, इस पर आधारित एक नाटक प्रस्तुत कीजिए (यशायाह 6:1-8)।

- आराधना के अनुभव के सहयोग से बच्चों द्वारा नाटक प्रस्तुत करने का प्रबन्ध करें।
- शिक्षण के समय बच्चों को नाटक की तैयारी कराएं।
- नाटक के प्रत्येक भाग प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं।
- बड़े बच्चे छोटे बच्चों की सहायता करें।
- बड़े व युवा बच्चे यशायाह, परमेश्वर की आवाज व उद्घोषक की भूमिका करें। उद्घोषक पूरी कहानी का सारांश बताने के साथ-साथ बच्चों की सहायता भी करें कि उन्हें क्या कहना व करना होगा।
- छोटे बच्चे साराप की भूमिका करें। धधकते कोयले के समान कोई वस्तु रखें।

भाग-1

उद्घोषक : यशायाह 6:1-7 के आधार पर कहानी का प्रथम भाग प्रस्तुत करें, और यह कहें, ''अब सुनें कि यशायाह क्या कहता है?''...

यशायाह : अपने हाथ आंखों पर रखते हुए ज़ोर से यह कहें,

''मैं परमेश्वर को मंदिर में देखता हूं! उसकी महिमा प्रत्येक स्थान पर है!

स्वर्गदूत उसके सिंहासन के चारों ओर उड़ रहे हैं।

मंदिर की नींव हिल रही है तथा भवन धुएं से भर गया है।

यह देखकर मैं बड़ा भयभीत हूं क्योंकि मैं पापी जन हूं।''

उद्घोषक : अब सुनिए कि विशाल स्वर्गदूत क्या गीत गा रहे हैं?

साराप (लड़के) : ज़ोर से गीत गांए, ''पवित्र, पवित्र, पवित्र, सेनाओं का प्रभु पवित्र है।''

साराप (लड़कियां): ''पुरी पृथ्वी उसकी महिमा से भरी है।''

[बच्चे प्रभु की पवित्रता संबंधी गीत भी गा सकते हैं]

यशायाह : ''प्रभु, मैं अशुद्ध हूं, अशुद्ध मनुष्यों के बीच रहता हूं, मैं तेरे निकट रहने योग्य नहीं।

एक साराप : धधकता कोयला लेकर यशायाह के पास आता है और कहता है, ''इसने तुझे छू लिया है, इसलिए तेरा अधर्म दूर हुआ, प्रभु ने तुझे अब शुद्ध कर दिया है।

भाग-2

उद्घोषक : पद 8 से आगे कहानी का शेष भाग बताएं फिर यह कहें, ''सुनो कि प्रभु क्या कहता है''...

परमेश्वर का शब्द :मुझे एक संदेशवाहक की आवश्यकता है। कौन है जो जाकर मेरे लोगों को शिक्षा देगा?

यशायाह : हे परमेश्वर मैं यहां हूं, मुझे भेज?

उद्घोषक : जिन लोगों ने नाटक में सहायता की, उनका हार्दिक धन्यवाद।

प्रश्न : जो प्रश्न ऊपर सूचि में दिए गये हैं बच्चों से पूछे जा सकते हैं।

कार्य : पेन्सिल, पेपर और माचिस लें और बच्चों से कहें :

- कौन-सी वस्तुएं हमें परमेश्वर की दृष्टि में अशुद्ध बनाती हैं? जो कुछ बच्चे बताते हैं उसे लिख लें।
- हम पापों से छुटकारा कैसे पा सकते हैं? पेपर जला दें। समझाएं कि परमेश्वर हमारे पापों को दूर करता है।

बच्चों से पूछें कि परमेश्वर की पवित्रता व वैभव से संबंधित कौन-से स्तुति के गीत हम गाते हैं जैसे कि स्वर्ग में स्वर्गदूत स्तुति की गीत गाते हैं। (बच्चों को बताने दीजिए व गाने का अवसर दीजिए)

धधकते हुए कोयले का एक चित्र सब बच्चे बनाएं। आराधना के समय वह चित्र युवाओं को दिखाएं और बताएं कि यह चित्र प्रकट करता है कि परमेश्वर पवित्र है, वह हमें भी पवित्र बना सकता है जैसे कि अग्नि सोने को शुद्ध करती है।

कंठस्थ करें : भजनसंहिता 51:10

कविता : तीन बच्चे भजनसंहिता 63:1-3 से एक-एक पद पढ़ें।

हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है,
मैं तुझे यत्न से ढूंढूगा,
सूखी और निर्जल असर भूमि पर
मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा
अति अभिलाषी है।
इस प्रकार से मैंने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की;
कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं।
क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है,
मैं तेरी प्रशंसा करूंगा।

परमेश्वर की पवित्रता पर बड़े बच्चे या युवा बच्चे गीत या कविता लिखें या लघु नाटिका बनाएं। वे इनके माध्यम से बता सकते हैं कि स्वर्गदूत स्वर्ग में कैसे परमेश्वर की स्तुति प्रसंशा करते हैं, और परमेश्वर किस प्रकार हमें शुद्ध करता है ताकि हम उसकी सेवा कर सकें।

प्रार्थना :हे परमेश्वर यशायाह की भांति हम आपकी पवित्रता व वैभव की प्रसंशा करते हैं, विशाल स्वर्गदूत आपकी आराधना करते हैं। हम भी उनके साथ मिलकर गाते हैं, प्रभु पवित्र, पवित्र है। आपकी पवित्रता के संमुख हम स्वयं को अपवित्र अनुभव करते हैं। हमें क्षमा प्रदान कर शुद्ध बनाईए। प्रभु यीशु के नाम में धन्यवाद। आमीन।

Copyright 2004 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net